सकारात्मक - वर्णमाला

● आत्मा के 7 गुण ● मूल्य व दैवी गुण ● अष्ट शक्तियाँ ● 16 कलाएँ

अ	अनादि, अव्यक्त, अविनाशी, अल्फ-अल्लाह, अकालमूर्त्त, अलौकिक, अवतार, अमृतवेला, अटेन्शन, **अहिंसा,अंतर्मुखता,अनुःशासन, अथक,** अभ्यास, **अचल, अडोल,** अतीन्द्रिय,**अष्टशक्ति**
आ	आत्मा, **आत्मविश्वास, आनंद, आधारमूर्त, आज्ञाकारी, आदर,** आराम करने की कला, आगे बढ़ने व बढ़ाने की कला
इ	इष्ट, इच्छा, इज्जत, इशारा
ई	ईश्वर, ईमानदार
उ	**उपराम, उपकार, उदारता, उद्धारमूर्त,** उड़ना, उत्थान, उन्नति, **उमंग, उत्साह**
ऊ	ऊपर, ऊँचा
ए	**एकमत, एकता, एकांतप्रिय,** एकनामी, एकाग्रता, एकरस, एवररेडी
ओ	ओंम शांति, ओजस्वी
क	कुमार, कमाल, कर्मयोगी, कर्मातीत, कुदरत, कायदा, करावनहार, **करूणा, कल्याणकारी,** कमाई काम्याबी
ख	खुदा, खिदमत, खूबी, खुशी, खजाना, खुशनसीब
ग	गॉडली स्टूडेन्ट, **गंभीरता, गुणग्राहकता,** गीताज्ञान, गुलदस्ता
घ	घर, घराना
च	चैतन्य, चरित्र, चिंतन, चक्रवर्ती, चतुर्भुज, चुस्त, चढ़ना
छ	छत्रछाया, छठातत्व
ज	जीवन, **जोड़ना, जवाबदारी**
झ	झलक, झोली, झेलना, झूलना

ट	टाइम, ट्रस्टी, टिकना, टपकना
ठ	ठहरना
ड	ड्रामा, डबल लाईट
ढ	ढ़ाढ़स, ढ़ाल
त	ताज, तख्त, तिलक, त्याग, तपस्या, तेजस्वी, तीव्रता
थ	थिरकना, थमाना
द	देवता, दातापन, दिव्यता, दैवीगुण, दयालु, दिलदार, दूरदर्शिता, दृढ़ता, दृष्टि, दुआयें, दीपक, दीपराज, दैवीय व्यवहार करने की कला, दूसरों को अपना बनाने की कला
ध	धर्म, धारणा, धैर्यता, धन
न	नम्बरवन, न्यारापन, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी, निष्काम, नष्टोमोहा, निमित्त, निमार्ण, नम्रता नियमितता, निर्मलता, नथिंग न्यु, निर्भयता, निश्चिंतता, नशा, निर्णयशक्ति, नेतृत्व करने की कला
प	परमपूज्य, प्यारा, पतितपावन, परमपिता, परमात्मा, परमधाम, प्रकाश, पुरूषार्थ, पुरूषोत्तम पार्टधारी, पवित्रता, प्रेम, प्रसन्नता, परोपकार, परिवार, पालना, परखशक्ति, प्रशासन करने की कला,परिवर्तन कला, पालना करने की कला
फ	फर्ज, फरिश्ता, फ्लाकदिल, फुलस्टॉप
ब	बाबा, बच्चे, ब्रह्मा, बेफिक्र, बे-बादशाही, बलवान, बहादुर, बेहद, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण, ब्रह्मलोक, बुद्धि, बैलेन्स, बच्चे,बलिहार, बहिश्त
भ	भगवान, भाग्य, भाग्यवान, भ्रातृत्व भावना
म	मन्मनाभव, मध्याजीभव, महादानी, मददगार, महान, मूल्यवान, मोहब्बत, मिलनसार, मधुरता, मीठा, मन,मौन, मुक्ति, महावीर, मर्यादा, महाराजन, मधुर बोलने की कला, मनोरंजन कला
य	याद, यात्रा, यथार्थता, यादगार, योगयुक्त, युक्तियुक्त, यशस्वी
र	रामराज्य, रचयिता, रचना, रहमदिल, रूहानियत, रायल्टी, रमणीकता, रत्न,रूद्र, राजऋषि, राजयोग
ल	लव, लवलीन, लाडले, लक्ष्य, लगन, लिखने की कला
व	विष्णु, वायदा, विश्वास, वफादार, वैराग्य, विदेही, विकर्माजीत, विजयी, वारिस, वर्सा, वाह वाह, व्यर्थ को समर्थ करने की कला
श	शिव, शंकर, शुभभावना, शुभकामना, शुभचिंतक, शांति, शक्ति, शीतलता, शालीनता, शुक्रिया

स	सर्वशक्तिमान, सतयुग, **सोलह कला**, संस्कार, **सत्यता**, सुख, सकारात्मक, **सहनशक्ति, सहयोगशक्ति सामनाशक्ति, समाने की शक्ति, संकीर्ण शक्ति, समेटने की शक्ति, सरलता, स्वच्छता सभ्यता, संतुष्टता**, संगमयुग, सालिग्राम, सन्यास, स्वरूप, स्वदर्शन, स्वचिंतन, स्वमान, स्मृति, **साहस**, समर्थ, स्वस्थिति, साक्षी, **स्थिरता, सादगी, समदृष्टि,सहनशीलता, समर्पणता**, सफलता,सपूत सकाश, सहारा, सार, **सीखने की कला, सिखाने की कला, समाने की कला, स्वस्थ्य रहने की कला**
ह	हॉजी, हिम्मतवान, **हल्का, हर्षितमुखता**, हीरो
क्ष	**क्षमा**, क्षमता, क्षत्रिय, क्षीरसागर, क्षणभंगुर
त्र	त्रेतायुग, त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ
ज्ञ	**ज्ञान**, ज्ञानसूर्य

वैश्विक ईश्वरीय संदेश

परमपिता शिव परमात्मा सभी *दिव्य मूल्यों* के स्तोत्र व *दिव्य गुणों* के सागर हैं। यही मूल्य एवं दिव्य गुण आने वाली सतयुगी सृष्टि की आधारशीला है। **5000** हजार वर्ष की पुनरावृत्तीय सृष्टि चक्र जो चार युगों (**सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग**) से बना है अब अपने **अंतिम पड़ाव** पर है।

विश्व महापरिवर्तन की इस अंतिम वेला में जब पुरानी **विकारी कलियुगी दुनिया** नई **निर्विकारी सतयुगी दुनिया** में रूपांतरित हो रही है **परमपिता परमात्मा** परमधाम से **प्रजापिता ब्रह्मा** के साधारण मानवीय तन में **अवतरित** हो रूहानी ईश्वरीय ज्ञान **(सच्चा गीता ज्ञान)** एवं सहज राजयोग द्वारा आत्माओं को पावन बनाकर **पाप व पॉच विकारों (काम,क्रोध, लोभ,मोह,अहंकार)** के चंगुल से मुक्त कर **दैवी गुणों की धारणा** करा रहे हैं जिससे अति **स्वच्छ एवं उन्नत 100 प्रतिशत** पवित्रता सुख शांति संपन्न **दैवी सभ्यता** का पुनर्निर्माण हो सके। आज भी इतिहास में इस विलुप्त प्राचीन सभ्यता का सतयुग, कृतयुग,स्वर्णिम युग, द्वारका, स्वर्ग, वैकुण्ठ, रामराज्य, बहिश्त, अल्लाह का बगीचा, पैराडाइज, एटलांटिस इत्यादि नामों से वर्णन प्राप्त होता है।

परमात्मा सर्व आत्माओं के **निराकार परमपिता** हैं जो अपने **आत्मा रूपी बच्चों** को *स्वर्गीय राज्य अधिकार* देने के लिए अवतरित होते हैं जब सभी **84 जन्मों** के चक्र को भोग कर अशक्त अशांत व दुःखी हो जाते हैं। इस **ईश्वरीय नाते** से हम **परमधाम निवासी** पार्टधारी आत्मायें **भाई भाई** हुए। चाहे हम किसी भी **धर्म वा प्रांत** के हों सभी का परमपिता के **स्वर्गीय मिलकियत** पर *समान अधिकार* है।

वे **परमशिक्षक** हैं जो रचयिता और रचना का सच्चा ज्ञान देते हैं जो कोई भी मनुष्य आत्मा दे न सके।

वे **परमसद्गुरू** एवं **सद्गति दाता** हैं । सर्व आत्माओं को दुःख अशांति पीड़ाओं से मुक्त कर वास्तविक निवास **परमधाम** में प्रस्थान करने का मार्ग दिखलाते हैं। उनके सिवाय कोई मनुष्य सद्गति दे न सके। वे स्वयं ही *मुक्ति व जीवनमुक्तिधाम (स्वर्ग)* के द्वार खोलते हैं।

रूहानी परमपिता शिव का फरमान	देह सहित देह के सभी धर्म एवं संबंधों को भूल अपने को **आत्मा (रूह)** समझ मुझ **बिंदुस्वरूप परमात्मा** परमरूह परमस्तोत्र को याद करने से तुम्हारे *पाप नष्ट* होकर तुम *ऊर्जावान पावन* बन जायेंगे व **मुक्ति जीवन मुक्ति** को प्राप्त करेंगे। अभी अपने असली घर मुक्तिधाम **लौटने** का समय है।

विश्व महापरिवर्तन के पहले अपने रूहानी परमात्म पिता को पहचान उनसे अपना ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें। **अभी नहीं तो कभी नहीं**। फिर ना कहना जताया नहीं।

शब्दों में शक्ति है। शब्दों द्वारा ही प्रकृति का निमार्ण होता है। ईश्वरीय महावाक्यों के **शब्द,** आत्मा के **7 गुण, मूल्यों एवं दैवी गुणों,** अष्टशक्तियॉ व **16** कलाओं पर आधारित इन **सकारात्मक शब्दों** को विश्व में फैलाकर भविष्य **नई स्वर्गीय दैवी दुनिया** की स्थापना में सहयोगी बनें।

स्वयं को जानो व ईश्वर को पहचानो। स्वयं बदलो तो जग बदलेगा ।